ईश्वरत्व क्या है?

अपनी श्रेष्ठ पुस्तक *सिनोनिम्स ऑफ़ द न्यू टैस्टामेन्ट* में रिचर्ड सी. ट्रेंच ने दावा किया है कि परमेश्वर को पूर्ण रूप से व्यक्त करता *theos* अर्थात ''जिससे प्रार्थना की गई हो'' से लिया गया नये नियम का एकमात्र शब्द *theotes* (कुलुस्सियों 2:9) है,[1] जिसका अनुवाद ''Godhead'' (AV, ASV), ''Deity'' (NASB, NIV), ईश्वरत्व और ''deity'' (RSV) है। कोई भी मनुष्य यह नहीं जानता कि ''ईश्वरत्व'' शब्द कितना सुनिश्चित है। सोपर ने अय्यूब को चुनौती दी थी, ''क्या तू ईश्वर का गूढ़ भेद पा सकता है? और क्या तू सर्वशक्तिमान का मर्म पूरी रीति से जांच सकता है?'' (अय्यूब 11:7)। पौलुस लिखता है कि कोई भी इस तथ्य से उलझ नहीं सकता कि ''भक्ति का भेद गम्भीर है'' (1 तीमुथियुस 3:16)। उसने इस जीवन में परमेश्वर की परिपूर्णता को पूरी तरह से समझने की बात छोड़ दी थी: ''आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर है! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं!'' (रोमियों 11:33)।

व्यावहारिक स्तर पर, यद्यपि परमेश्वर चाहता है कि हम उसे जानें क्योंकि केवल उसे जानकर ही हम स्वर्ग में जा सकते हैं। ''और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें'' (यूहन्ना 17:3)। प्रेमी परमेश्वर हमसे कोई ऐसा काम करने के लिए नहीं कहता जो असम्भव हो, और उसकी आज्ञाएं कठिन नहीं हैं (1 यूहन्ना 5:3)। पैदल चलने वाले साधारण व्यक्ति को भी परमेश्वर का उद्धार करने वाला ज्ञान मिल सकता है (यशायाह 35:8)। ''इस कारण निर्बुद्धि न हो, पर ध्यान से समझो, कि प्रभु की इच्छा क्या है?'' (इफिसियों 5:17)।

''एलोहीम'' शब्द

यदि यूनानी शब्द THEOS उसका अर्थ देता है ''जिससे प्रार्थना की जाती है,'' तो इब्रानी शब्द *एलोहीम* में भी ऐसा ही विचार है, जिसका अर्थ, ''भयदायक'' या ''पवित्र''[2] है। इस प्रकार *एलोहीम* रूप का अर्थ उसके लिए होता है जिसकी आराधना की जाती है। परन्तु व्याकरण रूप में इस शब्द का अनुवाद निर्गमन 20:3 की तरह ''ईश्वर'' का बहुवचन रूप मिलता है: ''तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर [एलोहीम] करके न मानना।'' यही रूप

उत्पत्ति 1:1 में मिलता है: ''आदि में परमेश्वर [एलोहीम] ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।'' इस बहुवचन रूप के कारण, कुछ लोगों ने बाइबल पर बहुईश्वरवाद की शिक्षा देने का आरोप लगाने का प्रयास किया है। इस कारण, उत्पत्ति 1:1 का उनका अनुवाद इस प्रकार होगा: ''आदि में ईश्वरों ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।'' बाइबल के दूसरे पद ज़ोर देकर कहते हैं कि केवल एक ही सच्चा परमेश्वर है (व्यवस्थाविवरण 6:4; 1 कुरिन्थियों 8:6) इसलिए कभी किसी विद्वान ने उत्पत्ति 1:1 का अनुवाद ''ईश्वरों'' शब्द के साथ नहीं किया। यदि उत्पत्ति 1:1 बहुत से ईश्वरों या देवताओं की शिक्षा नहीं देता, तो *एलोहीम* शब्द बहुवचन रूप में क्यों है ? पुरातत्व खोज से पता चलता है कि पुराने समय के लोग संख्यात्मक बहुवचन के साथ, महिमा या आदर के लिए बहुवचन का इस्तेमाल करते थे। आदर का यह बहुवचन उत्पत्ति 42:30 में मिलता है, जहां यूसुफ के भाइयों ने मूलत: यह कहा, ''कि जो पुरुष उस देश का स्वामी है, उसने हम से कठोरता के साथ बातें कीं, और हम को देश के भेदिए कहा।'' मूसा के मूल लेख में इस शब्द के बहुवचन रूप ''स्वामियों'' का इस्तेमाल हुआ है [देखिए NASB], परन्तु केवल संदर्भ से ही पता चलता है कि यह एक ही व्यक्ति अर्थात यूसुफ को कहा गया है। इस कारण अनुवादकों ने इस वाक्यांश का अनुवाद ''देश का स्वामी'' करते हुए बहुवचन को एक वचन में अनुवादित कर दिया।

पवित्र शास्त्र में परमेश्वर के लिए शब्द के एकवचन (*eloah*) रूप का इस्तेमाल बहुत ही कम हुआ है, परन्तु बहुवचन रूप 2,570 बार आता है। इससे यह स्पष्ट है कि अनुवादक एक ही तरह से उत्पत्ति 1:1 में पाए जाने वाले शब्द को एकवचन रूप में क्यों लेते हैं। अंग्रेज़ी के अनुवादों में इस बात का ध्यान रखा जाता है कि परमेश्वर के लिए पहला अक्षर बड़ा हो अर्थात वे इसे ''God'' ही लिखते हैं। बाइबल का कोई भी छात्र किसी भी ईश्वर/देवता (god) या बहुत से देवताओं (gods)को सृष्टि के कर्त्ता के रूप में नहीं मानता।

त्रिएकत्व

एलोहीम के बहुवचन रूप का एक और महत्व भी हो सकता है। यद्यपि बाइबल का परमेश्वरत्व एक इकाई है (व्यवस्थाविवरण 6:4 में *ehad*; 1 कुरिन्थियों 8:6 में *heis*), परन्तु वह एक त्रिएक जीव अर्थात त्रिएकत्व भी है। उत्पत्ति 1:26 में परमेश्वर ने कहा, ''हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं।'' बाइबल की दूसरी आयत परमेश्वर को सृजनात्मक कार्य के एक भाग के रूप में दिखाती है। हमें दूसरी आयतों से पता चलता है (यूहन्ना 1:3; कुलुस्सियों 1:16) कि सृष्टि की रचना में यीशु का योगदान था। इससे स्पष्ट होता है कि परमेश्वरत्व में तीन सदस्य हैं। इन विषयों को प्रकट नहीं किया गया कि ये तीनों एक कैसे हो सकते हैं और एक तीन कैसे हो सकता है (व्यवस्थाविवरण 29:29), परन्तु बाइबल के तथ्य में कोई संदेह नहीं है।

परमेश्वर पिता

''एक ही आत्मा, ... एक ही प्रभु, ... और सब का एक ही परमेश्वर और पिता''

(इफिसियों 4:4-6), विश्वास की ऐसी बातें हैं जिन पर समझौता नहीं किया जा सकता और ये बातें भाइयों में मिलाप की एकता से भी महत्वपूर्ण हैं। यीशु ने पिता होने का दावा नहीं किया। (उसके ''अनादि पिता'' होने की यशायाह 9:6 की भविष्यवाणी उसके ''अनन्तकाल का पिता'' होने की तरह ही सही है, जिससे उसके समय की सीमा में न रहने का संकेत मिलता है।) यीशु ''पिता'' से अपने आप को अलग मानता था, जिस पर वह निर्भर था और जिससे वह प्रार्थना करता था। उसकी प्रार्थनाएं, ''हे पिता'' (जैसे यूहन्ना 17:1 में) से आरम्भ होती थीं, और उसके संदेश सुनने वालों को ''तुम्हारा पिता'' और ''तुम्हारा स्वर्गीय पिता'' (मत्ती 5:45, 48) कहकर संबोधित किया जाता था। उसने अपने चेलों को सिखाया कि सृष्टि के परमेश्वर को ''हमारा पिता'' (मत्ती 6:9) कहकर संबोधित करें। बेतनिय्याह के कब्रिस्तान में ''यीशु ने आंखें उठाकर कहा, हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि तू ने मेरी सुन ली है। और मैं जानता था, कि तू सदा मेरी सुनता है ...'' (यूहन्ना 11:41, 42)।

क्रूस का कष्ट निकट आने पर, यीशु परेशान था: ''अब मेरा जी व्याकुल हो रहा है। इसलिए अब मैं क्या कहूं? हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा? परन्तु मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुंचा हूं। हे पिता, अपने नाम की महिमा कर'' (यूहन्ना 12:27, 28क)। यह गलत धारणा कि यीशु पूरा परमेश्वरत्व है, स्पष्ट रूप से यीशु की प्रार्थना के उत्तर में एक आवाज़ द्वारा नकार दी गई अर्थात उस आवाज द्वारा जो आकाश से आई थी: ''मैं ने उसकी महिमा की है, और फिर भी करूंगा'' (यूहन्ना 12:28ख)। वहां खड़े कुछ लोगों को लगा कि उन्होंने किसी गर्जना की आवाज सुनी है, जबकि दूसरों को लगा कि कोई स्वर्गदूत यीशु से बात कर रहा था। इस पूरी घटना से परमेश्वरत्व के दो सदस्यों के बीच हुई बातचीत का पता चलता है।

कुछ लोगों ने पिता के लिए अरामी भाषा के शब्द *अब्बा* में एक प्रगाढ़ और असामान्य सम्बन्ध ढूंढ़ने का प्रयास किया है। परन्तु *अब्बा* रूप का अरामी भाषा में वही अर्थ है जो यूनानी में *पेटर* का और अंग्रेज़ी में ''father'' का। स्पष्टत: यीशु ने गतसमनी के बाग में प्रार्थना करते हुए अरामी और यूनानी दोनों ही रूपों का इस्तेमाल किया था (मरकुस 14:36)। वह उससे प्रार्थना कर रहा था जो यीशु से अलग था और जिसे उसने जीवन और मृत्यु पर शक्ति रखने वाले के रूप में माना था। वह यह भी मानता था कि जिसे वह ''पिता'' कहता था उसमें पाप क्षमा करने की शक्ति है। उसने क्रूस पर से अपने हत्यारों के लिए प्रार्थना की, ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं'' (लूका 23:34)। स्पष्टत: वह जिसे ''पिता परमेश्वर'' कहा जाता है और जो ''परमेश्वर पुत्र'' और ''परमेश्वर पवित्र आत्मा'' से भिन्न है सर्वोच्च जीव है।

परमेश्वर पुत्र

पहले ही इस बात पर ध्यान दिया जा चुका है कि परमेश्वर पिता द्वारा यह कहे जाने के समय कि ''हम मनुष्य को बनाएं'' (उत्पत्ति 1:26) परमेश्वर पुत्र भी सृष्टि की रचना के काम में शामिल था। बहुत से टीकाकारों का मानना है कि पुराने नियम में परमेश्वरत्व के

दूसरे व्यक्ति को ''यहोवा के दूत'' के रूप में जाना जाता है। (देखिए उत्पत्ति 16:7; 22:15, 16; 31:11, 13; निर्गमन 3:2-4.) परन्तु यदि यहोवा का दूत परमेश्वर पुत्र होता, तो उसने आराधना करवाने से इन्कार नहीं करना था (न्यायियों 13:16)। यीशु के विषय में, पिता ने आज्ञा दी, ''कि परमेश्वर के सब स्वर्गदूत उसे दण्डवत करें'' (इब्रानियों 1:6)। यहोवा का स्वर्गदूत एक महत्वपूर्ण जीव तो था, परन्तु ईश्वरत्व का दूसरा व्यक्ति नहीं।

किंग जेम्स के संस्करण और हिन्दी अनुवाद में, जलती आग में चार लोगों के बारे में नबूकदनेस्सर के शब्दों (''... चौथे पुरुष का स्वरूप ईश्वर के पुत्र के सदृश्य''; दानिय्येल 3:25) से कई लोग सोचते हैं कि शद्रक, मेशक और अबेदनगो के साथ यीशु ही था। सम्भवत:, वही था; परन्तु उसके शब्द अधिक अक्षरश: हैं ''चौथे पुरुष का स्वरूप ईश्वर के पुत्र के सृदश है।'' यह अनुवाद नबूकदनेस्सर के ज्ञान से मेल खाता है अर्थात यह सम्भव नहीं है कि वह मूर्तिपूजक राजा परमेश्वरत्व के दूसरे सदस्य, अर्थात परमेश्वर के पुत्र के विषय में जानता हो।

परन्तु यह बात स्पष्ट है कि पुराने नियम के समय में परमेश्वरत्व का दूसरा सदस्य सक्रिय था। वह केवल सृष्टिकर्त्ता ही नहीं, बल्कि बाद में इस्राएलियों के लिए आत्मिक चट्टान के रूप में जिसमें से उन्होंने पीया, जंगल में भी उनके साथ था (1 कुरिन्थियों 10:4)।

एक अर्थ में, सब मनुष्य परमेश्वर के पुत्र हैं (देखिए लूका 3:38), और स्वर्गदूत परमेश्वर के पुत्र हैं (अय्यूब 1:6; 2:2); परन्तु एक अर्थ में केवल यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है (भजन 2:7; यूहन्ना 1:18)। वह अपनी तरह का केवल एक ही है अर्थात सबसे अलग है। उसने पवित्र आत्मा के द्वारा कुंवारी मरियम से शरीर में जन्म लिया था (लूका 1:35), परन्तु बैतलहम के जन्म में एक उत्तेजक पिता की रोमांचकारी भविष्यवाणी (''आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ''; भजन 2:7) का कोई हवाला नहीं था। यह यीशु के पुनरुत्थान और राजा के रूप में मुकुट पहनने और याजक के रूप में अभिषिक्त होने के सम्बन्ध में स्वर्ग के आनन्द (किसी घर में जन्म की घोषणा के आनन्द की तुलना में) की सांकेतिक अभिव्यक्ति थी (प्रेरितों 13:33; इब्रानियों 1:5; 5:5)।

ईश्वरत्व के दूसरे सदस्य के रूप में, मूलत: उसका कभी भी जन्म नहीं हुआ था। जन्म लेने वाला पुत्र अपने पिता की आयु जितना कभी नहीं हो सकता। यदि यीशु का जन्म हुआ होता, तो वह प्रथम नहीं हो सकता था (प्रकाशितवाक्य 1:17)। वह परमेश्वर की सृष्टि में सबसे पहला नहीं बल्कि इसका आरम्भ करने वाला था (प्रकाशितवाक्य 3:14)। वह स्वयं आदि था (प्रकाशितवाक्य 22:13)। उससे पहले कुछ भी नहीं था, क्योंकि उसका आरम्भ नहीं है (मीका 5:2; प्रकाशितवाक्य 1:17)। इसलिए केवल सांकेतिक अर्थ में ही यीशु को परमेश्वर का पुत्र कहा जा सकता है। जिस अर्थ में वह परमेश्वर का पुत्र है उसमें वह सभी मानवीय जीवों और स्वर्गदूतों से बहुत ऊपर है और परमेश्वर से कम नहीं है। वह परमेश्वर पिता और परमेश्वर आत्मा के समान ही ईश्वरीय है।

एक और चौंकाने वाली भविष्यवाणी में, परमेश्वर पिता ने लिखा था कि वह 30 ईस्वी में पिन्तेकुस्त के दिन अपने पुत्र के राज्याभिषेक के दिन कहेगा: ''हे परमेश्वर तेरा सिंहासन

सदा सर्वदा बना रहेगा'' (भजन संहिता 45:6)। पिता यीशु को परमेश्वर कह रहा था, जिसकी पुष्टि इब्रानियों की पत्री के लेखक ने की है: ''परन्तु पुत्र से कहता है, कि हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन युगानुयुग रहेगा ...'' (इब्रानियों 1:8)। दुख की बात है कि अंग्रेज़ी के रिवाइज़्ड स्टैण्डर्ड अनुवाद में भजन 45:6 में पिता द्वारा यीशु को ''परमेश्वर'' कहने की बात निकाल दी गई है। वहां केवल ''Your divine throne endures for ever and ever'' लिखा गया है। RSV में यीशु को ईश्वरीय सिंहासन तो दिया गया है परन्तु उसके परमेश्वर होने की बात निकाल दी गई है।

आने वाले मसीह के बारे में एक और भविष्यवाणी (कि वह एक कुंवारी का पुत्र होगा; यशायाह 7:14) उसके परमेश्वर होने की विशेषता है; क्योंकि यदि उसका जन्म कुंवारी से नहीं हुआ, तो वह हमसे अधिक ईश्वरीय नहीं हो सकता। भविष्यवाणी की वही आयत जो उसके मामले में परमेश्वर को दर्शाती है ''परमेश्वर हमारे साथ [है]'' (मत्ती 1:23) उसे ''इम्मानुएल'' नाम देती है। यीशु के अन्य शीर्षक ''अद्‌भुत युक्ति करने वाला पराक्रमी परमेश्वर अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार'' (यशायाह 9:6, 7) किसी नाशवान मनुष्य के लिए अनुपयुक्त होंगे।

परमेश्वर के देह में आने की एक और भविष्यवाणी मीका द्वारा की गई थी। उसने बैतलहम में जन्म लेने वाले का दर्शन देखा जिसने वहां से नहीं होना था, परन्तु उसका निकलना प्राचीन समय से अर्थात अनन्तकाल से था (मीका 5:2)।

पहले ही, परन्तु स्पष्ट रूप से परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु की सांकेतिक व्याख्या दी गई है (भजन 2:7)। यही शीर्षक पिता ने लोगों को स्पष्ट स्वर में यीशु के बपतिस्मे (डुबो कर) के समय और पुन: उसके रूपांतरण के पहाड़ पर इस्तेमाल किए थे (मत्ती 3:17; 17:5)। परमेश्वर के इसी विशेष अर्थ में चेले उसे पानी पर चलता देखने के बाद पुकार उठे थे कि वह परमेश्वर का पुत्र है (मत्ती 14:33)। कैसरिया फिलिप्पी में पतरस के अंगीकार ने भी इस नासरी बढ़ई को परमेश्वर का दर्जा दे दिया था (मत्ती 16:16)।

एक आयत में जहां यहोवा के गवाह (अर्थात Jehovah's Witnesses) यीशु को ''एक ईश्वर'' (यूहन्ना 1:1) तक नीचे ले आए हैं, बाइबल के विद्वानों का सही अनुवाद यीशु को ''परमेश्वर'' दिखाता है। त्रिएकत्व की धारणा से बचने के भ्रमित प्रयास में, यहोवा के गवाह बहुईश्वरवादी बन गए हैं। यीशु को ''परमेश्वर'' से ''एक ईश्वर'' (उनके अनुसार मूल यूनानी भाषा में ऐसा ही है) बनाकर, वे आयत 6 तक जाने में असफल होते हैं; क्योंकि वे यह अनुवाद करने का साहस नहीं जुटा पाते कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला ''एक ईश्वर'' की ओर से भेजा गया मनुष्य है (वहां यूनानी शब्द को बदला नहीं गया)। इसके अतिरिक्त यूहन्ना 20:28 में वे थोमा को यीशु से यह कहलवाने का साहस नहीं कर पाते कि, ''हे मेरे प्रभु और एक ईश्वर'' (वहां भी यूनानी शब्द वही रहता है)। उनका मानना है कि यीशु केवल ''एक ईश्वर'' था, परन्तु वे यह दावा नहीं करते कि थोमा भी ऐसे ही सोचता था।

यीशु के शत्रु अपने आपको परमेश्वर के तुल्य बताने वाले किसी भी व्यक्ति का विरोध

करते थे (यूहन्ना 5:18), परन्तु पौलुस ने दावा किया कि मसीह का स्वभाव ऐसा है कि उसके लिए परमेश्वर के तुल्य होने का दावा करना उसके वश की बात है (फिलिप्पियों 2:6)। इस अर्थ में, यीशु कहेगा कि वह और पिता एक हैं (यूहन्ना 10:30)। वे एक व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि इस अर्थ में एक थे कि यीशु भी अपने पिता की तरह ही ईश्वरीय स्वभाव में साझी था।

पिता के साथ एक होने के यीशु के दावे को वे लोग साफ़ समझते थे जो उस पर पथराव करना चाहते थे, क्योंकि उन्हें इस बात की समझ थी कि इसका क्या अर्थ था कि वह ''परमेश्वर'' है (यूहन्ना 10:33)। सांसारिक पुत्र की तरह जिसका मांस तथा लहू अपने पिता से मिलता है, यीशु का स्वभाव अपने पिता की तरह ही है (*charakter tes hupostaseos autou*; इब्रानियों 1:3) अर्थात वह हू-ब-हू अपने पिता की तरह ही है।

चौथी शताब्दी में एरियुस नामक एक आदमी का तर्क था कि यीशु अपने पिता ''की तरह'' (*homoios*) था परन्तु अथेनेसियुस का दावा था कि वह अपने पिता की तरह गुण में ''वैसा ही'' (homnos) था।[3] यीशु में परमेश्वर होने की कोई कमी नहीं थी, क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती थी (कुलुस्सियों 2:9)।

परमेश्वर पवित्र आत्मा

संसार की रचना में केवल परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र ने ही नहीं, बल्कि एक जीव जिसे परमेश्वर का आत्मा कहा जाता है (उत्पत्ति 1:2), पृथ्वी के पानी पर मंडराता था ने भी योगदान दिया। इसने जीवन की रचना में योगदान दिया (भजन 104:30; अय्यूब 33:4)। पवित्र आत्मा इस्राएल के बीच रहकर न्यायियों और भविष्यवक्ताओं को प्रेरणा देता था (गिनती 11:17, 25, 29; 2 शमूएल 23:2; हग्गै 2:5), परन्तु इस्राएलियों ने विद्रोह करके पवित्र आत्मा को शोकित किया था (यशायाह 63:10, 11)। दाऊद ने प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा उसे न छोड़े (भजन 51:11)।

यह जीव, कबूतर के रूप में, यीशु के डुबकी अर्थात बपतिस्मा लेकर बाहर आने के समय उस पर उतरा था (मत्ती 3:16); इस प्रकार यीशु भरपूरी से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था (यूहन्ना 3:34)। उसके उपदेश तथा अनुग्रह के उसके काम कुछ भाग में थे क्योंकि, जैसा उसने कहा, ''प्रभु का आत्मा मुझ पर है'' (लूका 4:18; देखिए प्रेरितों 10:38)।

पृथ्वी छोड़कर जाने का पूर्वानुमान लगाकर यीशु ने अपने प्रेरितों को यह समझाते हुए कि सच्चाई का आत्मा क्या है और वह सहायक कौन है जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, पवित्र आत्मा देने की प्रतिज्ञा की थी (यूहन्ना 14:16, 17; देखिए KJV)। उसने प्रेरितों को सारी सच्चाई सिखानी थी जिससे उनके स्मरण में वे सब बातें आ जानी थीं जो यीशु ने उन्हें सिखाई थीं, और भविष्य की बातें भी प्रकट करनी थीं (यूहन्ना 14:26; 16:13)। उन पर आत्मा के आने को एक डुबकी (''बपतिस्मा पाया''; प्रेरितों 1:5ख) कहा जाना था, और उससे उन्हें सामर्थ मिलनी थी (आयत 8)। प्रेरितों के द्वारा उसके काम करने को ''आत्मा की वाचा'' (2 कुरिन्थियों 3:8) कहा जाना था। उसका विरोध करने वाले के लिए कोई क्षमा

नहीं थी (मत्ती 12:32)। कुछ अर्थ में दाऊद में आत्मा के वास से अलग, नये नियम की कलीसिया के सदस्यों को आत्मा मिला (यूहन्ना 7:39; प्रेरितों 2:38; 5:32; गलतियों 4:6)।

आत्मा के मांस और हड्डियां नहीं होतीं (लूका 24:39), तौभी पवित्र आत्मा का दिमाग़ परमेश्वरत्व के दो अन्य सदस्यों से अलग है (रोमियों 8:27)। वह सब कुछ जानता है (1 कुरिन्थियों 2:11)। वह सुन सकता है, बोल सकता है और प्रार्थना कर सकता है (यूहन्ना 16:13; रोमियों 8:26)। शोकित हो सकता है (इफिसियों 4:30)। वह समय की सीमा से बाहर है (इब्रानियों 9:14)। उससे झूठ बोलने का अर्थ परमेश्वर से झूठ बोलना है (प्रेरितों 5:3, 4)। क्योंकि वह परमेश्वरत्व के अन्य सदस्यों से किसी भी प्रकार कम ईश्वरीय नहीं है, इसलिए यीशु ने स्पष्ट रूप से बताया कि पानी का बपतिस्मा आत्मा का नाम लेकर भी दिया जाना चाहिए:

> यीशु ने उनके पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं (मत्ती 28:18-20)।

सम्बन्ध

ईश्वरत्व के तीन सदस्यों में क्या सम्बन्ध है? यद्यपि पिता और पुत्र और आत्मा सब स्वभाव में अर्थात ईश्वरीय व परमेश्वर होने में एक ही हैं, परन्तु अधिकार में वे एक नहीं हैं। अब नये नियम के युग में, मसीह सब बातों को पूरा करता है (इफिसियों 1:23) और सब में सब कुछ है (कुलुस्सियों 3:11)। उसका अपमान करने का अर्थ पिता का अपमान करना है (यूहन्ना 5:23); तौभी मसीह का सम्बन्ध पिता से है (1 कुरिन्थियों 3:23), और पिता उसका सिर है (1 कुरिन्थियों 11:3)। परमेश्वर यीशु से बड़ा (यूहन्ना 14:28) अर्थात सबसे बड़ा है (यूहन्ना 10:29) और सबसे ऊपर है (इफिसियों 4:6)। स्वर्ग में मसीह स्वयं भी उसके अधीन होगा जिसने सब कुछ उसके अधिकार में दिया है (1 कुरिन्थियों 15:28)।

पिता और मसीह दोनों ने आत्मा को संसार में भेजा (यूहन्ना 14:16; 15:26), और जो कुछ भी वह करता है वह यीशु की महिमा के लिए ही है (यूहन्ना 16:14)। इसलिए पवित्र आत्मा से की गई प्रार्थनाएं सही नहीं हैं। आज, परमेश्वर की इच्छा से हर बात पुत्र पर केन्द्रित है। पिता के पास सबसे अधिक अधिकार हैं, परन्तु अस्थाई रूप से उसकी यह इच्छा है कि, मसीही युग में, उससे भी बढ़कर उसके पुत्र को महिमा दी गई है। ऐसा न्याय के दिन तक रहेगा, क्योंकि पिता स्वयं किसी का न्याय नहीं करता, केवल पुत्र ही न्याय करता है (यूहन्ना 5:22)। फिर तो, जब फिर समय अनन्तकाल में चला जाएगा, तो अधिकार का वह ईश्वरीय प्रबन्ध (पिता पहले स्थान पर, पुत्र दूसरे पर और आत्मा तीसरे पर) फिर से लागू हो जाएगा।

पाद टिप्पणियां

[1]रिचर्ड सी. ट्रेंच, *सिनोनिम्स ऑफ़ द न्यू टैस्टामेन्ट* (लंदन: पृ. न., 1880; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स मिशि.: Wm. B. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1978), 7. [2]विलियम जेन्सेनियुस, *ए हिब्रू एण्ड इंग्लिश लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामेंट;* अनु. एडवर्ड रोबिन्सन, सं. फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, एण्ड चार्ल्स ए. ब्रिगस (ऑक्सफोर्ड: क्लेयरडन प्रैस, 1957), 43. [3]एसिस व अथेनेसियुस कलीसिया के बुज़ुर्ग थे जो मसीह के अनादि स्वभाव से असहमत थे। 35 ई. में नीकया नगर की परिषद ने आधिकारिक तौर पर आरियन के विचार का कि मसीह मातहत या सृष्टि था, जो परमेश्वर के अनन्त और ईश्वरीय स्वभाव में सहभागी नहीं था, खण्डन किया था।